International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 93-94

बच्चन के काव्य में प्रेम के विविध रूप

रीना अग्रवाल

सहायक प्रोफसर, (हिंदी विभाग), जनता विद्या मंदिर, चरखी दादरी, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

प्रेम और सौन्दर्य के कवि हरिवंश राय बच्चन हालावाद के प्रमुख कवि के रूप में जाने जाते हैं। इनके काव्य में चित्रित प्रेम छायावादी सूक्ष्म प्रेम न होकर स्थूल प्रेम हैं जिसमें कवि की वैयक्तिक अनुभूतियाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं।

कवि हृदय अत्यन्त संवेदनशील होता है और वह सदा से ही अपनी रचनाओं में प्रेम एवं सौन्दर्य की अभिव्यक्ति करता आया है। साहित्य की चाहे कोई भी विद्या हो, प्रेम की अभिव्यक्ति किसी न किसी रूप में होती ही रही है और कविता में तो यह और अधिक मुखर हो जाती है। कभी कवि स्वच्छन्द प्रेम का आकर्षक स्वरूप प्रस्तुत करता है तो कभी दाम्पत्य प्रेम को सुन्दर मान उसकी अभिव्यक्ति करता है। डॉ. नगेन्द्र ने दाम्पत्य प्रेम को प्रेम का सर्वोत्म रूप मानते हुए कहा है।

> ''दाम्पत्य रूप में प्रेम का यह व्यापक संसार दो प्राणियों के बीच सिमटकर परम आकर्षित हो जाता है।''[1]

बच्चन स्वच्छन्द प्रेम के गायक हैं। उनके प्रेम में वैयक्तिक अनुभूतियों की गूँज है। वे प्रेम को सबसे बड़ा धर्म और प्रेमिका को ईश्वर तुल्य मानते हुए कहते हैं –

> शक्ति तुम्हीं हो मुझको देती
> तुम्ही तरी जीवन की खेती
> तुम्ही जीवन हो प्राण हमारी
> और तुम्ही भगवान।[2]

बच्चन के काव्य में प्रारंभ से ही प्रेम निरुपण मिलता है। तेजी से विवाह से पूर्व उनके जीवन में जो अपूर्णता थी उसकी अभिव्यक्ति करते हुए वे कहते हैं –

> ''प्राणों से सकें मिल किस तरह दीवार हे तन''[3]

उनके काव्य संग्रह 'मिलन यामिनी', 'प्रणयपत्रिका' में प्रेम की परिपूर्णता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। उनके काव्य में प्रेम के विविध रुपों के दर्शन होते हैं –

प्रेम का संयोग पक्ष : बच्चन का प्रेम वर्णन स्थूल एवं मूर्त है। हालावादी कवि होने के कारण इनका प्रेम निरुपण भोगवादी है। 'मिलन यामिनी' में प्रेमिका से मिलन की तीव्र उत्कंठा व्यक्त हुई है। प्रेमी प्रेमिका से मिलने के लिए प्रत्येक कष्ट सहने को तत्पर है–

> ''प्यार के क्षण में मरण भी तो मधुर है
> प्यार के पल में जलन भी तो मधुर है।''[4]

संयोग वर्णन में कहीं–कहीं शारीरिक एवं स्थूल प्रेम का चित्रण भी देखने को मिलता है। इनके प्रेम निरुपण में आनन्द, उल्लास एवं समर्पण की भावना दिखाई देती है –

> ''गोद में तुम हो गगन में चाँदनी है
> बद्ध तुम्हारे भुजपाशों में और कहो क्या बंधन मानूँ।''[5]

कवि की दृष्टि में नारी पुरुष संबंध नैसर्गिक हैं। उसमें अश्लीलता का कोई स्थान नहीं। वह कोई अपराध नहीं। प्रेम में वे सामाजिक वर्जनाओं की परवाह नहीं करते–

> ''आज कहलाता है अश्लील हृदय का अनियंत्रित उद्‌गार
> विकृत जीवन को ही जग आज समझ बैठा है लोकाचार।''[6]

जग सदा से ही प्यार में बाधक रहा है। किन्तु कवि का हृदय उसकी परवाह किये बिना प्रेम की मादकता से उन्मुक्त हो जाना चाहता है –

> ''वह मादकता ही क्या जिसमें बाकी रह जाए जग का भय।''[7]

कवि की दृष्टि में नारी केवल भोग्या नहीं, वह जीवन की प्रेरणा हैं। वे उसके प्यार में अपना सब कुछ समर्पित करने को तैयार हैं, किन्तु आत्म सम्मान खोकर वे प्रेम की याचना नहीं करना चाहते। मिलन में वियोग की आशंका और अतृप्ति सदा बनी रहती है।

वियोग पक्ष : बच्चन की कविताओं में जहाँ मिलन की उत्कंठा है, वही विरह की तीव्र पीड़ा भी। 'निशा निमंत्रण', 'एकान्त संगीत' में विरह की पीड़ा स्पष्ट दिखाई देती है। प्रिया के वियोग में कवि पूछता है।

> किस पर अपना प्यार चढ़ाऊँ? यौवन का उद्‌गार चढ़ाऊँ।[8]

विरह को प्रेम की कसौटी माना जाता है। विरह की अग्नि में तपकर ही प्रेम निखरता है। बच्चन जी भी प्रेम में विरह को आवश्यक मानते है। वेदना से ही प्रेम में अहम दूर होता है। प्रेम में यदि मिलन जरूरी है तो विरह भी। कवि कहता है –

> ''प्यार मेरा फूल को भी, प्यार मेरा शूल को भी
> फूल से मैं खुश, नहीं शूल से नाराज, बुलबुल गा रही है आज।''[9]

कवि की पीड़ा स्वयं अनुभूत है इसलिए उसमें वेदना की तड़प अधिक मुखर हुई है। 'प्रणय पत्रिका' में आत्मसमर्पण का भाव है। प्रेम में पीड़ा, विषाद, वियोग, बंधन सभी आनन्द देने वाले हैं। विरह

की अग्नि में जलने वाले प्रेमी को हर पल प्रेयसी की प्रतीक्षा रहती है।

परम्परा से हटकर प्रेम चित्रण करने के कारण आलोचकों ने इनकी कविता को वासनामय कहा किन्तु इनका प्रेम वर्णन स्पष्ट, सरल एवं सहज है। उसमें मिलन का आनन्द है, उमंग है, उल्लास है तो विरह की पीड़ा भी। इनका प्रेम अलौकिक नहीं लौकिक है। वह न तो छायावादी कवियों की तरह सूक्ष्म, अनंत, अव्यक्त एवं रहस्यमय है और न ही भक्तिकालीन कवियों की भांति मर्यादित। इनका प्रेम स्वच्छन्द प्रेम है जिसमें तन व मन दोनों का महत्व है। जिसमें अनुभूति की सच्चाई है, किसी प्रकार का दुख छिपाव नहीं।

संदर्भ

1. डॉ. नगेन्द्र, विचार और विवेचन, पृ. 45
2. बच्चन रचनावली–3, पृ. 471
3. बच्चन, मधुकलश, कवि की वासना, कविता
4. बच्चन, मिलन यामिनी, पूर्व भाग, गीत 25
5. बच्चन, मिलनयामिनी, गीत–18, मध्यभाग, गीत 24, 25
6. बच्चन, मधुबाला, पाटलमाल
7. बच्चन, मधुबाला, प्यास कविता
8. बच्चन, निशा निमंत्रण, गीत 69
9. बच्चन, एकांत संगीत, गीत 44